Open Access
उदयगिरी - बहुभाषिक इतिहास संशोधन पत्रिका
(A Bimonthly, Refereed, & Peer Reviewed Journal of History)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://udayagiri.aaassher.org/
ISSN (Online): 2583-8423
Volume 1, Issue 5, December 2023; Pages 131 – 134
DOI: 10.5281/zenodo.10072827

Original Research Article

महात्मा गांधी की मानवतावादी विचारधारा

प्रा. डॉ. गनी गफूर साहब शेख

सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय मुक्रमाबाद तहसील: मुखेड जिला: नांदेड ४३१७१९ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: shaikhgg5555@gmail.com

Received: 12 October, 2023 | Accepted: 23 October, 2023 | Published: 26 October, 2023

भारत प्राचीन काल से ही देवभूमि कहलाता रहा है। इस भूमि पर अनेकसंत, महात्मा, अवतारों महापुरुषों ने जन्म लिया है, जिन्होंने पूरे विश्व को प्रभावित किया है ।करमचंद गांधी एवं पुतलीबाई के घर पर 2 अक्टूबर 1869 को पुत्र का जन्म हुआ, जो मोहनदास करमचंद गांधी कहलाए। यही मोहनदास आगे महात्मा गांधी बने एवं विश्व पटल पर शांति दूत के रूप में छा गए, जिन्होंने भटके को राह दिखाई, गरीबों को स्वाभिमान, साहस और ईमानदारी का पाठ पढ़ाया । गांधी जी में सत्य के लिए जोखिम उठाने का स्वाभिमान हमेशा रहा । गांधी जी को संस्कार अपने माता-पिता एवं परिवार से मिले थे । व्रत उपवास अनशन धार्मिक प्रवृत्ति उन्हें अपनी माता पुतलीबाई से मिली जिसने उन्हें अनशन, सत्याग्रह की प्रवृत्ति में सहायता प्रदान की गांधी जी की हिंदू धर्म में गहरी आस्था थी, फिर भी "मानवता सबसे बड़ा धर्म है।" इस बात को उन्होंने प्रधानता दी है। गांधी जी मानवतावादी थे। मानव सेवा में ही ईश्वर सेवाउन्हें निहित थी। मानव कल्याण, गरीबों की सेवा में उन्हें ईश्वर के दर्शन होते थे। वह ईश्वर को एक शाश्वत सिद्धांत मानते थे। ईश्वर विश्व व्यापी हैं। गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में कहा है कि "ईश्वर की व्याख्याएं गणित है । उनकी विभूतियां मुझे आश्चर्यचकित तो करती है, क्षण भर के लिए मुग्ध भी करती है; किंतु मैं सत्य रूपी ईश्वर का पुजारी हूं। मेरी दृष्टि में वही एकमात्र सत्य है दूसरा सब कुछ मिथ्या है ।"[01]

मानवतावाद अर्थात एक मानव दूसरे मानव के साथ इंसानियत से रहे जिसमें सामान्य भाईचारा हो। वर्ग, वर्ण, ऊंच नीच का भेद भाव और जात-पात का बोलबाला न हो। स्त्री पुरुष समानता हो। गांधीजी का जन्म भारत ही नहीं पूरे विश्व में मानवता कायम करने के लिए श्रेष्ठ सिद्ध हुआ है। उनके विचारों व आदर्श ने ऐसे युग का निर्माण किया, जो आने वाले युगों में भी प्रासंगिक रहेगा। मानवता, गांधी जी के मार्ग, सिद्धांत व आदर्शों पर चलकर ही प्रकाशित होगी । गांधी

जी ने मानवता एवं मानव को बिना भेदभाव के गौरवान्वित किया। मानव जीवन के हर क्षेत्र में गांधी जी के विचार प्रासंगिक हैं। वे मानवीय चेतना के आभा पुंज थे। उनकी किरणें भटकती मानवता और गिरते मानव मूल्य को राह दिखाने में आज भी सक्षम है । गांधी जी कोई उपदेशक या पथ प्रवर्तक नहीं थे। किंतु उनके कार्यों, सिद्धांतों, और आदर्श ने हमें मानवता की राह दिखाई । इसी कारण वे हमेशा स्मरणीय रहेंगे। गांधी जी ने समस्या ग्रस्त भारत को आजाद कराया। अहिंसा से हिसा को हटाया, ब्रिटिश हुकूमत से भारत स्वतंत्र कराया । वे अपने प्रयास में वे सफल रहे । गांधी जी ने अविद्या को विद्या, असत से सत, अंधकार को प्रकाश एवं हिसा को अहिंसा से मिटाने की जन जागृति जागाई उन्होंने अहिंसा से सविनय आंदोलन को भारत की आजादी की नीव बनाया । बाद में इसी अहिंसा से देश को आजाद कराया। गांधी जी ने आध्यात्मिक ता से जुड़कर अनेक ग्रंथोंका अध्ययन किया । मनु की अनेक पुस्तके पढ़ी गीता एवं रामायण उनके प्रिय ग्रंथ रहे । उनकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति ने उन्हें यह दर्शन दिया कि "घृणा पाप से करो, पापी से नही । गांधी जी के इसी दर्शन ने उन्हें महात्मा एवं राष्ट्रपिता का दर्जा दिलाया । गांधी जी ने अनेको महान काम किए पर कभी उनका प्रचार नहीं किया। फिर भी जब कभी गांधी जी का स्मरण होगा तो गर्व से उनका नाम पूर्ण भारत में मानवता कायम करने के लिए श्रेष्ठ सिद्ध होगा । उनके विचारों एवं आदर्श ने ऐसे युग का निर्माण किया जो, आने वाले युगों में भी यादगार रहेगा ।मानवता गांधी मार्ग, सिद्धांत व आदर्शों पर चलकर ही प्रकाशित होगी । मानव जीवन के हर क्षेत्र में गांधी जी के विचार महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । उनके रोजमर्रा के जीवन की व्यवहारिकता लोगों को प्रेरणादाई सिद्ध हुई। गांधी जी का जीवन उद्देश्य साफ था। गांधीजी सभी चीजों के प्रति सचेत रहते थे ।

गांधी जी का कहना था कि "सभी बड़ी वस्तुएं छोटी-छोटी चीजों से ही बनी होती है । मेरा पूरा जीवन ही छोटी-छोटी चीजों से बना है।"[02] छोटी चीजों का महत्व हम अपने बच्चों को जितनी कम मात्रा में समझा पाते हैं उतनी ही मात्रा में हम सफल रहते हैं। गांधी जी बिना निचा ऊंचा मानव सेवा के पक्षधर थे । उनका कहना था कि किसी दूसरे को अपने से नीचे ऊंचा मानना पाप है । पाप का स्पर्श हमें अशुद्ध बना देता है न कि किसी इंसान का जिस इंसान ने अपना जीवन दूसरों की सेवा में लगा दिया है, ऊसके लिए ना तो कोई ऊंचा है, न नीचा। उनका कहना था कि जब तक हम देंगे नहीं तब तक हमें कुछ ना मिलेगा। आत्म त्याग से ही सब मिलता है, ऊंच नीच से नहीं । वे दूसरों की नहीं अपनी गलती ढूंढते थे । गांधी जी का कहना है कि जब मैं भी किसी गलती करने वाले व्यक्ति को देखता हूं तो खुद से कहता हूं कि मैंने भी तो गलतियां की है। इस तरह विश्व में हर एक से संबंध जोड़ देता हूं उनका मानना था कि आदमी को अपनी गलती मानना चाहिए और सुधार करना चाहिए । गलती से निराशबादी नहीं आशावादी बनना चाहिए। गांधी जी का कहना था कि मैं आशावादी हूं क्योंकि मैं अपने में विश्वास करता हूं । यह कोई अहंकार की बात नहीं है यह बात है अपनी विनम्रता की,गहराइयों की कहता हूं । मैं आशावादी हूं, क्योंकि मैं अपने से बहुत अधिक आशाएं करता हूं । इस के अलावा गांधी जी का कहना है कि आदमी जैसा बनना चाहता है, बन सकता है । जैसा बनना चाहोगे, वैसा ही बनोगे उनका मत है कि मनुष्य अपने को जैसा बनना है वैसा ही प्राय हो बन जाता है। मनुष्य को अपनी अंतरात्मा की विरुद्ध काम नहीं करना चाहिए। गांधी जी ने तमाम उम्र भारत के निर्धन वर्ग के लिए काम किया। उनका मानना था कि देश का बड़ा हिस्सा

निर्धन लोगों का है। अपेक्षित, शोषित लोगों का है। निम्न श्रेणी के लोगों को ऊंचा उठाना उनका लक्ष्य रहा है और असमानता, अस्पृश्यता, शोषण के लिए लड़ना उनका उद्देश्य रहा है । यही उनके जीवन दर्शन का आधार है । इसलिए उनका दर्शन आजादी के ७५ वर्ष से अधिक हो जाने के बाद भी अधिक प्रासंगिक हो गया है ।

उनका दर्शन महिला पुरुष समान अधिकार का दर्शन है । नशा मुक्ति का, अंधविश्वास, युद्ध रहित, विश्व बंधु, मजदूर रहित समाज का है। कुल मिलाकर उन्होंने तमाम बुराइयों को कुरीतियों से मुक्ति और हिंसा को मिटा कर अहिंसात्मक समाज का निर्माण करने का कार्य किया है । उन्होंने हर एक को रोटी मिले निर्धन के लिए रोटी सबसे अहम होती है । इसलिए उन्होंने उनका हक दिलाने का कार्य किया है। जीवन में वह शिक्षा को अत्यंत महत्व देते थे। हर व्यक्ति को पढ़ लिखकर अपने योग्य बनना है ताकि वे सुचारू जीवन यापन कर सके । गांधी जी शिक्षा से मनुष्य को सुयोग्य नागरिक बनाने का उपाय मानते थे। महात्मा गांधी ने कहा कि "जिस प्रकार टीका की तालीम पाने के लिए हत्या की कला सीखनी पड़ती है इस प्रकार अनीता की तालीम पाने के लिए आत्म समर्पण की कला सीखनी पड़ेगी।"[03]

गांधी जी महिलाओं को अहिंसा की देवी कहते थे । उनका मत था कि महिलाओं को अबला मानना उनका अपमान करना है। उन्होने नारी आंदोलन का सुत्रपात किया। उनका मानना था की महिलाएं सीता के समान स्वाभिमानी और शक्तिशाली बनकर राष्ट्र का सम्मान बढ़ाएं। इसलिए महिलाओं की अधिकारिकता को उच्चता प्रदान की। उन्होंने भारतीय महिलाओं को निडर एवं साहसी बनाया एवं सम्मान दिलाया । सत्याग्रह में भाग दिलाया दांडी आंदोलन में महिलाओं ने ब्रिटिशों को दिखा दिया कि वह कमजोर नहीं है। गांधी जी ने महिलाओं को आंदोलन का नेतृत्व करना सिखाया फल स्वरुप नशाबंदी, बाल विवाह, दहेज प्रथा, देवदासी प्रथा, बहु विवाह प्रथा आदि के प्रति आंदोलन हुए। सहीं मायने में गांधी जी ने महिलाओं को उनकी शक्ति वअधिकारों के प्रति सचेत किया। अहिंसा की देवी को सम्मान दिलाया।

गांधी जी का स्पष्ट मत है की स्वराज का अर्थ सबसे दुर्बल एवं उपेक्षित व्यक्ति को विकसित करना है। जब तक दुर्बल व्यक्ति का विकास नहीं होता तब तक स्वतंत्रता अधूरी है । यही विकास की बड़ी एवं सच्ची कसोटी है । जब तक हर आंख का आंसू पोछ नहीं दिया जाता, राम राज्य नहीं आ सकता । आज भी एक अरब से अधिक आबादी वाले देश भारत में बहुत बड़ी संख्या में लोग गरीबी रेखा के नीचे जी रहे हैं । दलित, आदिवासी, गरीब महिलाएं अपने मूल अधिकार भी ठीक से प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं। हर एक का जीवन स्तर उठाने की दिशा में गांधीजी प्रयत्नशील रहे। गांधी जी ना तो आधुनिकता के विरोधी थे, न मशीन के। वह हर उस मशीन के पक्ष में थे, जो शिक्षक और उत्पीड़न श्रम की पीड़ा कम करती है एवं जो आम आदमी को ससमान जीना सिखाती है। साथही बेरोजगारी पैदा नहीं करती है । उदारीकरण और भूमंडलीकरण में शहर और गांव तथा अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई को गहरी होने से रोक सकता है। औद्योगिकरण और शहरीकरण को और अनियोजित ढंग से बढ़ने से रोक सकता है। पर्यावरण को आध्यात्मक ढंग से बिगड़ने से बचा सकता है, क्योंकि गांधी जी का मत है कि प्राकृतिक संसाधन हमारी बुनियादी ज़रूरतें पूरी करने को पर्याप्त है। गांधी जी के विचार में उसका संतुलन एवं समग्रता में निहित है। आर्थिक विषमता, सामाजिक उत्पीड़न, शोषण,

अशांति को जन्म देता है । अनीति और अनैतिकता को बढ़ावा देता है ।व्यक्तिगत स्वार्थ बढ़ता है । संपत्ति का जनहित में उपयोग को प्रेरित करता है। दरिद्र के विकास को सच्चा विकास कहता है । इस दृष्टि से गांधी के विचार सार्थक और संगत जान पड़ते हैं। महात्मा गांधी ने राष्ट्रभाषा संबंध में कहा है कि "देश सेवा करने के लिए स ब उत्सुक है परंतु राष्ट्र सेवा तब तक संभव नहीं जब तक कोई राष्ट्रभाषा न हो दुख की बात है कि हमारे बंगाली भाई राष्ट्रभाषा का प्रयोग न करके राष्ट्रीय हत्या कर रहे हैं। इसके बिना देश की आम जनता के हृदय तक नहीं पहुंचा जा सकता । एक अर्थ में बहुत लोगों के द्वारा हिंदी को काम में लिया जाना मानवतावाद के क्षेत्र की बात हो।"[04] आधुनिकता की दौड़ में हमें गांधी के अहिंसा के मार्ग पर चलने का अर्थ संसार से वैराग्य लेना नहीं है वरना रचनात्मक एवं व्यापक दृष्टिकोण रखना है ।" 27, 28 अक्टूबर 1934 को मुंबई में कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया गया । राजेंद्र प्रसाद जी गांधी जी के बड़े अनन्य भक्त तथा त्यागी व्यक्ति थे। उन्होंने अपने अध्यक्ष की भाषण में कहा कि" हम एक बार अ सफल हो सकते हैं, दो बार अ सफल हो सकते हैं परंतु किसी न किसी दिन हमअवश्य सफ ल होंगे। "[05]

उन्होंने अहिंसा व सत्याग्रह में पूरा विश्वास दिया हमारे जीवन की प्रेरणा स्रोत उनके विचार बन सकते हैं। आज भी हमारे देश के अधिकांश लोग यह मानते हैं कि गांधी जी आज होते तो भारत का विकास और अधिक होता । भ्रष्टाचार, बेईमानी, विषमता, अनैतिकता शायद कुछ कम होती। राजनीति अपेक्षाकृत साफ़ सुथरी हो इसलिए गांधी जी के योगदान एवं मानवतावादी विचारधारा को भूलाना नहीं चाहिए। इसलिए उनका साहित्य आज भी पढ़ा जाता है । उनके विचार ज्यादा स्पष्ट और सटीक हैं। उनका जीवन सादगी और ईमानदारी का पर्याय था। बापू में ऐसी शक्ति थी कि वह हर एक समस्या का हल निकाल लेते थे । स्वार्थी तत्व भले ही उन्हें भूल जाएं पर देश की जनता उन्हें आज भी पूजती है क्योंकि उनमें आम आदमी नजर आता है । गांधी जी 2 अक्टूबर एवं 30 जनवरी को ही नहीं हमेशा याद किया जाने योग्य है।

संक्षेप में भारत के विकास की कल्पना भी गांधी जी के बिना अधूरी है । क्योंकि भारत जैसे विशाल देश का विकास गांधी जी के मानवतावादी विचारधारा से ही संभव है।

पाद टिप्पणी

१. रामधारी सिंह दिनकर, रेती के फूल : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1987 पृष्ठ 68, 69

२. श्रीमती वंदना सक्सेना, गांधी जीवन और दर्शन : प्रकाशक बी, आर. पब्लिशर्स जयपुर पृष्ठ 97

३. डॉ मनोज कुमार, लोकतंत्र एवं विश्व शांति,: अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, अंसारी रोड, दरियागंज – दिल्ली, पृष्ट 55

४. भगवान सिंह, गांधी और हिंदी राष्ट्रीय जागरण : भारती प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 40

५. प्रेमलाल सिंह, डॉक्टर सुधा सिंह, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस : विनोद बुक सेंटर, शिवाजी मार्ग, करताल नगर, दिल्ली, पृष्ठ 81.